अवसर को...अवसर... और स्वयं को सुंदर बनायें...!!!

कई लोग 'अवसर' और 'भाग्य' के सम्बन्ध में उलझे हुए रहते हैं। अवसर, ये कुदरत द्वारा हमारे प्रति लिखा हुआ एक वरदान है। लेकिन अफसोस, कि हमें उसे पढ़ने की फुर्सत ही नहीं है। सारी ज़िन्दगी मनुष्य 'अवसर' को ढूंढ़ता रहता है, और अवसर 'मनुष्य' को ढूंढ़ता रहता है। अवसर हारता है, तो उसे कोई हानि नहीं होती, परंतु मनुष्य हाथ आये अवसर को खो देता है, तो बहुत कुछ हानि हो जाती है। जीवन, ये विषाद योग या रोग नहीं, किन्तु ईश्वर प्रदत्त आनंद योग है। अगर आप आनंदमय रहेंगे, तो परमात्मा बहुत अवसर भेजता है। लेकिन अपनी झोली में ही छेद है, तो मिले हुए अवसर को भी कहाँ बचा सकते हैं! अवसर का शक के दायरे में मूल्यांकन करेंगे, तो निराशा ही हाथ लगेगी। अवसर का श्रद्धापूर्वक मूल्यांकन करेंगे, तो आपके ऊपर उसकी अपार वर्षा होगी। अगर उसे हाथ से जाने दिया, तो आँसू पोंछने के लिए रुमाल भी नहीं मिलेगा। आज कई लोग वायदेबाज़ होते हैं। आज का काम कल करेंगे, ऐसे लोगों की तादात बहुत है। सरदार वल्लभ भाई पटेल ने उचित ही कहा है, 'बीते हुए पल तो ज्योतिष भी ध्यान में नहीं लेते।'

- ब्र. कु. गंगाधर

अवसर को परखने के लिए एक और अलग ही दृष्टि चाहिए। भीड़ में जुड़ जाने का उतावलापन करना, ये मूर्खता है। दस हज़ार लोगों के साथ हाज़िर रहने से ज़्यादा बेहतर है योग्य स्थान पर दस आदमियों के साथ जुड़ जाना।

मनुष्य की जिज्ञासा और निरंतर जागृति ही उसकी सफलता का द्वार खोलती है। अवसर का तैयार पैकेट बाज़ार में नहीं मिलता। एक समय की बात है, जंगल में एक बहुत सुंदर तालाब था, तालाब के किनारे पर एक बहुत सुंदर वृक्ष था। उस वृक्ष पर बंदरों का राज था। तूफान मचाने वाले बंदरों के डर से उस वृक्ष पर कोई भी पशु-पक्षी बैठ नहीं सकते थे।

एक दिन एक महर्षि और एक राजकुमार वृक्ष के नीचे आकर बैठे। तभी बंदरों ने तूफान मचाना शुरू कर दिया। ये देख महर्षि ने बंदरों से पूछा: 'आप राह पर जाने वालों को आराम करने क्यों नहीं देते?' बंदरों के सरदार ने कहा: 'हमें मानव जाति से बहुत ईर्ष्या है। ईश्वर ने आप मनुष्यों को बहुत सुंदर बनाया और हमें कुरूप बनाया, बिल्कुल बेढंगा।'

महर्षि ने कहा: 'इसमें भगवान को दोष देने का कोई औचित्य नहीं है, और ना ही लाभ है। जो जैसा कर्म करता है, जैसी आस्था रखता है, ऐसा उसे फल मिलता है। भगवान सबको सुधरने का समान अवसर देते हैं, लेकिन कोई उसे पहचानते हैं, कोई नहीं। अवसर को भुना लेने वाले फायदे में रहते हैं और गुमा देने वाले जीवन के अंतिम दिन तक उसकी ओट में पछताते हैं।'

बंदरों के सरदार ने कहा: 'हम नहीं मानते कि भगवान सबको अवसर देता है, ये सब बकवास है। मानो या न मानो, आपकी मर्जी।'

महर्षि पास वाले वृक्ष के नीचे जाकर बैठे और राजकुमार को भी वहाँ बुला लिया। इतने में कहीं से एक आकाशवाणी हुई: 'आकाश में बिजली चमकेगी, जो बंदर-बंदरिया तालाब में कूद पड़ेंगे वे बंदर कान्तिवान पुरुष और बंदरिया बहुत सुंदर अप्सरा बन जायेंगी। इसलिए जिसे मनुष्य बनना हो, इस अवसर का लाभ ले लें।'

बंदरों के मन में अनेक प्रकार के प्रश्न उत्पन्न होने लगे। क्या बिजली तालाब के पानी में प्रवेश करेगी और उस समय पानी में कूद पड़ने से हम सुंदर स्त्री और पुरुष बन जायेंगे, ये कैसे सम्भव है?

इतने में आकाश में एक पवित्र बिजली चमकी और उसी क्षण एक बंदरी तालाब में कूद पड़ी। बाकी के बंदर उस क्षण की राह देख रहे थे कि वो बंदरी अप्सरा जैसी सुंदर बनकर बाहर निकलती है या नहीं। इतने में वो बंदरी सुंदर अप्सरा बनकर तालाब से बाहर निकली। सबको पता लग गया कि ये आकाशवाणी सच्ची थी, और सब बंदर तालाब में कूद पड़े, और बाहर निकले तो बंदर ही रहे। उन्हें इस बात का पश्चाताप हुआ कि उन्होंने उस पवित्र क्षण का लाभ क्यों

-शेष पेज 4 पर...

वृत्ति की चेकिंग कर अनासक्त और इच्छा मात्रम अविद्या बनो

जब सुख इलाही कहते हैं। तो एक इलाही माना अनगिनत और दूसरा अल्लाह के तरफ से मिलने वाला सुख। अल्लाह जितना सुख देता है, उतना कोई दे नहीं सकता है। हम उसका वर्णन नहीं कर सकते हैं। बाबा का बनने से कितना सुख मिला है, कभी बैठ कर गिनती करें तो दु:ख की बातें सहज ही भूल जाती हैं।

बाबा कहते हैं- जब माया की हलचल मचाने वाली बात आए तो अंगद को याद करो। अंगद से अचल रहना सीखते हैं। माया का काम ही है हलचल में लाना। दोष उसको नहीं दे सकते। किसी न किसी को निमित्त बनाकर हमें परखती है। उसके लिए बाबा हमेशा कहते है बच्चे महावीर बनो। महावीर हैं तो माया कितनी भी कोशिश करे हिला नहीं सकती। हमारी स्थिती हिल नहीं सकती। तो सदा ही हमें संगमयुगी पुरूषार्थी जीवन में महावीर बनकर रहना है। जैसे वो डॉक्टरी की पढ़ाई पढ़ते हैं, तो जब तक पास न हो जाएं छोड़ते नहीं। हम भी नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनने के लिए पढ़ रहे हैं। जब तक वह लक्षण नहीं आयेंगे तब तक पढ़ाई नहीं छोड़ेंगे। सदा लक्ष्य की स्मृति लक्ष्यदाता की स्मृति को मज़बूत बनाती है, इसलिए बाबा ने कहा कि इस पुरानी दुनिया में हमारी कोई आसक्ति ना हो। जब पहले-पहले हम लोग ज्ञान में आए थे तो 'आसक्ति' और 'अनासक्ति'- यह दो शब्द बहुत अच्छे लगते थे। हम चेक करते थे कि हमारी वृत्ति कहाँ तक अनासक्त है। जिसको बाबा दूसरे शब्दों में कहते हैं-इच्छा मात्रम् अविद्या। इच्छा की कोई विद्या ही नहीं है, इच्छा की इतनी अविद्या हो जाए। नहीं तो इंसान कहेंगे-इच्छा के बिना कैसे चल सकते हैं? लेकिन सांसारिक पदार्थों की, व्यक्तियों के द्वारा प्राप्तियों की अविद्या हो जाये। जब दुनिया पराई है तो उनके द्वारा प्राप्ति कि इच्छा रखना माना कम समझ है। जिस कारण ज्ञान को धारण नहीं कर सकते हैं। पुरानी दुनिया में आसक्ति है तो इन आखों के द्वारा कुछ देख लेंगे, कानों द्वारा सुन लेंगे, मुख के द्वारा कोई ऐसी बात बोल देंगे या खा लेंगे। खाने-पीने की इच्छा होती है तो परहेज या मर्यादा तोड़ देते हैं। जैसे खाने की परहेज है वैसे बोलने की परहेज है। सम्भलकर बोलो। ऐसे ही दृष्टि का आधार वृत्ति पर है। हमारी वृत्ति साफ है, यह हमारी दृष्टि से पता चलता है। जो शब्दों द्वारा हम किसी को नहीं कह सकते, कोई हमारे भाव को नहीं समझता, लेकिन वृत्ति साफ है, सेवा में किसी का भला करने की भावना है, तो वो काम करेगी। शुभ भावना से सेवा की हॉबी को बढ़ाओ। बोल के बजाए अपनी भावना को श्रेष्ठ बनाओ, अच्छा बनाओ। इससे हमारी वृत्ति-दृष्टि साफ होती जायेगी। अपने आप को अच्छा लगेगा।

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

वाय नहीं , वाह वाह कहो

हमने फरिश्तेपन की बातें सुनी, तो फरिश्ते का मतलब ही है डबल लाइट। फरिश्ता अर्थात् जिसका पुरानी दुनिया, पुराने संस्कार से कोई नाता नहीं। इन सबसे न्यारा और बाप का प्यारा। एक बाबा दूसरा मैं, तीसरा न कोई। तो ऐसा अनुभव कर रहे हैं? ब्राह्मण जीवन की कमाई का हिसाब बहुत बड़ा है। बाबा कहते हैं कि अगर सच्चे दिल में सच्चे बाप की याद है तो हर कदम में पदम मिलता है। आप सोचो हर कदम में पदम, तो आप कितने कदम उठाते होंगे। अगर याद में कदम उठाया तो पदम आपका जमा हो गया। और सारे दिन में आपकी कितनी कमाई जमा हो गयी। कितनी सहज और बड़ी प्राप्ति है। ऐसा कोई दुनिया में होगा, चाहे कितना भी बड़ा हो। हमारे तो कदम में पदम है क्योंकि हमको कमाई कराने वाला देखो कौन है! दाता है, उसके पास तो कोई कमी है ही नहीं, इसलिए बहुत कुछ मिल सकता है। आप चेक करना। अमृतवेले बहुत बढ़िया कमाई का साधन है। जिसको भगवान मिला उसे और चाहिए क्या! और एक ही हमारा ऐसा बाबा है जो सर्व सम्बन्ध भी निभा सकता है, सर्व प्राप्ति भी करा सकता है। जिस समय चाहिए उस समय हज़ूर हाज़िर हो जाता है। बाबा कहो और बाबा सामने आ जाता है। लेकिन किसके आगे हज़ूर हाज़िर है? जो हज़ूर की हर श्रीमत को जी हाँ, जी हाँ, हाज़िर बाबा प्रैक्टिकल में करता है। कैसी भी परिस्थिति हो, माया आये भी तो वार नहीं करे, हार खाके जाये। हम लोग छोटेपन में ही यज्ञ में आये थे, तो मम्मा हमको छोटी-छोटी बातों से समझाती थी कि तुम लोग माया-माया क्या करती रहती हो! जैसे कोई घर में बड़ा होता है तो उसके पोत्रे धोत्रे उसके साथ खेलते हैं। नाक भी पकड़ते हैं, बाल भी खींचते हैं लेकिन वो परेशान होता है क्या? उसको पता है कि ये मेरे से खेलते हैं। तो ये सब विकार भी आपसे खेलते हैं। मम्मा कहती थी - व्यर्थ संकल्पों का गेट है क्यों? वाय नहीं कहो, वाह कहो। व्यर्थ संकल्प में पहले आता है क्यों, फिर कैसे, कब, कहाँ...ये सब आता है। मम्मा कहती थी कै-कै कौन कहता है? कौआ। तो कौआ बनना अच्छा लगता है या होलीहंस बनना अच्छा है? हंस की विशेषता क्या होती है? उसमें निर्णय शक्ति बहुत अच्छी होती है। वो कंकड़ में से रत्न चुगता है। वो तो हंस है, आप होलीहंस हो।

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

व्यर्थ को खत्म कर दुआओं के पात्र बनो

हमारा संसार बाबा है, इसलिए कभी भी अंदर में यह भावना नहीं आनी चाहिए, यह मेरा स्टूडेन्ट है, यह तेरा। किसी भी प्रकार का स्वार्थ न हो। स्वार्थ अधीन बना देता है। किसी देहधारी में स्नेह जाता है माना स्वार्थ है। इस स्वार्थ से ईश्वरीय मर्यादाओं का उल्लंघन होता है, इसलिए साकार बाबा जैसे नि:स्वार्थी था वैसे नि:स्वार्थी बनो। तो सबसे न्यारे और प्यारे बन जायेंगे। विघ्नों से कभी घबराओ नहीं। विघ्न भल कितना भी बड़ा हो लेकिन अपने संकल्प से कभी भी बड़ा नहीं करो। जड़ को समझकर बीज को काटो। जड़ क्या है उसको समझो।

माया से डोन्टकेयर करना ठीक है, आपस में नहीं। जो आपस में डोन्ट केयर करते उनकी ज़ुबान पर लगाम नहीं रहता। जो आता वह बोल देते, यह स्वभाव भी डिससर्विस करता है।

ज़िद्द का स्वभाव ही ज्ञान में बहुत विघ्न डालता है। ज़िद्द वाले अपना और दूसरों का नुकसान करते हैं। जहाँ जी हाँ का स्वभाव है वहाँ सब फूल बरसाते हैं, दुआयें देते, जहाँ ज़िद्द है वहाँ पानी के मटके भी सूख जाते हैं।

हमें सदा अपने स्वमान में रहना है, नाउम्मीद नहीं बनना है। ऐसे कभी नहीं सोचो यह तो मेरे पुराने संस्कार हैं। यह सोचना भी उसकी पालना करना है। मेरा दिव्य संस्कार हो, ईश्वरीय संस्कार हो। जो बहुत समय से पाले हुए संस्कार हैं उन सब संस्कारों को जला देने का दृढ़ संकल्प करो। रियलाइज़ कर उन्हें खत्म करो। व्यर्थ संकल्प तभी खत्म होंगे जब व्यर्थ संस्कार खत्म होंगे।

अपने को दुआओं के आधार पर चलाओ। बाबा की दुआयें लेते चलो। मुझे हर आत्मा से दुआ ज़रूर मिलनी चाहिए। दुआयें हमारा प्यार है, प्यार ही हमारी दुआयें हैं। जहाँ सर्व का मेरे से, मेरा सर्व से प्यार है वहाँ मेरे बाबा की दुआयें हैं। इससे ही मुझ आत्मा की उन्नति है। यह हमारा अन्तिम जन्म, अन्तिम घड़ी है, किसकी हमारे ऊपर दुआ नहीं है तो उससे किसी भी तरह दुआयें ज़रूर लेनी हैं। हमारे अन्दर अनुमान, परचिन्तन, ईर्ष्या, द्वेष आदि का कांटा नहीं होना चाहिए। इन कांटों को इस यज्ञ में स्वाहा करो।

जहाँ नियम है वहाँ संयम है। जहाँ कायदा है वहाँ फायदा है। ईश्वरीय मर्यादा ही हमारा स्वधर्म है। सबसे प्रेम करो लेकिन प्यार मत दो, बाबा से सम्बन्ध जुटाओ स्वयं से नहीं। किसी से हल्का व्यवहार मत करो। गम्भीर रहो। हँसी-मज़ाक से भी बहुत नुकसान होता है इसलिए ऐसी हँसी नहीं करो। काम से काम बस...।

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका